ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 2

शिशु संस्कार बोध

घर-घर जागे सद्संस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार

आशीर्वचन

तेरापंथ समाज की एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है - ज्ञानशाला। इसके माध्यम से बालक-बालिकाओं में जैन तत्त्व विद्या को आत्मसात् कराने तथा सुसंस्कारों के बीजारोपण का प्रयास किया जाता है। यह गतिविधि बहुत निष्पत्तिपूर्ण प्रतीत हो रही है। जो पुरुष तथा महिला कार्यकर्ता इस गतिविधि के पवित्र संचालन में सहयोग देते हैं, वे बाल पीढ़ी के निर्माण में अपना योगदान देते हैं।

ज्ञानशाला को मैं अत्यंत उपयोगी मानता हूँ, इसलिए साधु-साध्वियाँ, समण श्रेणी, श्रावक-श्राविकाएँ -- सब इस गतिविधि को भावात्मक एवं क्रियात्मक यथोचित सहयोग देने का प्रयास करें।

शुभाशंसा।

5 मई, 2012
बालोतरा

आचार्य महाश्रमण

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 2

शिशु संस्कार बोध

संपादन :

मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

मुनि उदित कुमार

प्रकाशन एवं नियोजन :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(ज्ञानशाला प्रकोष्ठ)

3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700001

फोन : (033) 2235 7956 / 2234 3598

इमेल : info@jstmahasabha.org

वेबसाइट : www.jstmahasabha.org

संस्करण : 2016

घर-घर जागे सद्संस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार

- आज का शिशु ही कल का समाज है।
- माता-पिता का व्यवहार ही शिशु की संस्कारशाला है।
- धार्मिक संस्कारों से ही व्यवहार व अध्यात्म शुद्ध रह सकता है।
- शिशु अनुकरणप्रिय है। उसे जैसा बनाना चाहते हो, वैसा पहले खुद बनो।
- शिशु वह सर्वग्राही भूमि है, जिस पर सब प्रकार के बीज बोये जा सकते हैं।
- शिशु में असीम क्षमता है, उसे नजरअंदाज मत करो, उसके विकास में सहायक बनो।
- जन्म के समय शिशु न अपराधी है और न उपकारी। उसमें ये संस्कार यहीं से मिलते हैं।
- शिशु स्वयं में एक कोरा (सफेद) कागज होता है। उस पर चाहे जैसे संस्कारों के चित्र उकेरे जा सकते हैं।
- शिशु स्वयं में एक स्वच्छ आरिसा (कांच) है, जिसमें माता, पिता व पूरे परिवार के व्यवहार का प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

– मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अनुक्रम	पृष्ठ
1.	परमेष्ठी वंदना	3
2.	संघ गीत	5
3	पच्चीस बोल (1-8)	6
4.	संस्कार सप्तक	8
5.	महावीर अष्टकम्	9
6.	भगवान महावीर	11
7.	सामान्य ज्ञान	13
8.	प्रेक्षाध्यान	15

SHISU SANSKAR BODH (VOLUME - 2)
Rs. 10/-

पाठ 1

परमेष्ठी वंदना | PARMESHTHI VANDANA

णमो अरहंताणं

वंदना आनन्द पुलकित, विनय नत हो मैं करूं।
एक लय हो एक रस हो, भाव तन्मयता वरूं।।

सहज निज आलोक से भासित स्वयं संबुद्ध हैं।
धर्म तीर्थंकर शुभंकर, वीतराग विशुद्ध हैं।।
गति-प्रतिष्ठा-त्राणदाता, आवरण से मुक्त हैं।
देव अर्हन् दिव्य योगज अतिशयों से युक्त हैं।।

Namo Arhantanam

Vandanā Ānanda Pulakit,
Vinayanat Ho Main Karoon,
Ek Laya Ho Ek Ras Ho,
Bhava Tanmayatā Varoon.

Sahaj Nij Ālok Se
Bhāsit Swayam Sambuddha Hain,
Dharm Tirthankar Shubhankar,
Vitrāg Vishuddh Hain.
Gati-Pratishthā-Trāndātā,
Āvaran Se Mukt Hain,
Dev Arhan Divya Yogaj
Atishayon Se Yukt Hain.

णमो सिद्धाणं

बंधनों की ृंखला से, मुक्त शक्ति-स्रोत हैं।
सहज निर्मल आत्मलय में सतत ओतप्रोत हैं।।
दग्धकर भव बीज अंकुर, अरुज अज अविकार हैं।
सिद्ध परमात्मा परम, ईश्वर अपुनरवतार हैं।।

Namo Siddhānam

Bandhanon Ki Shrinkhalā Se,
Mukt Shakti-Srot Hain,
Sahaj Nirmal Atmalaya Mein
Satat Otprot Hain.
Dagdhakar Bhav Bij Ankur,
Aruj Aj Avikār Hain,
Siddh Parmātmā Param,
Ishwar Apunaravatār Hain.

णमो आयरियाणं

अमलतम आचार धारा में स्वयं निष्णात हैं।
दीप सम शत दीप दीपन के लिए प्रख्यात हैं।।
धर्म-शासन के धुरंधर धीर धर्माचार्य हैं।
प्रथम पद के प्रवर-प्रतिनिधि प्रगति में अनिवार्य हैं।।

Namo Āyariyānam

Amalatam Āchar Dhāra Mein
Swayam Nishnāt Hain,
Deep Sam Shat Deep Deepan
Ke liye Prakhyāt Hain.
Dharma-Shasan Ke Dhurandhar
Dheer Dharmāchārya Hain,
Pratham Pad ke Pravar-Pratinidhi
Pragati Mein Anivārya Hain.

णमो उवज्झायाणं

द्वादशांगी के प्रवक्ता ज्ञान गरिमा पुंज हैं।
साधना के शान्त उपवन में सुरम्य निकुंज हैं।।
सूत्र के स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं सदा।
उपाध्याय महान श्रुतधर, धर्म शासन सम्पदा।।

Namo Uvajhayānam

Dwadashāngi Ke Pravaktā
Jnān Garimāpunj Hain,
Sādhanā Ke Shānt Upvan
Mein Suramya Nikunj Hain.
Sootra Ke Swādhyay Mein
Sanlagna Rahte Hain Sadā,
Upādhyāy Mahān Shrutadhar,
Dharma Shāsan Sampadā.

णमो लोए सव्वसाहूणं

सदा लाभ-अलाभ में, सुख-दुःख में मध्यस्थ हैं।
शान्तिमय, वैराग्यमय, आनन्दमय आत्मस्थ हैं।।
वासना से विरत आकृति सहज परम प्रसन्न हैं।
साधना धन साधु अन्तर्भाव में आसन्न हैं।।

Namo loye Savva Sāhoonam

Sadā Lābh-Alābh Mein,
Sukh-Dukh Mein Madhyasth Hain,
Shāntimaya, Vairāgyamaya,
Ānandmaya Ātmasth Hain.
Vasana Se Virat Ākriti Sahaj
Param Prasanna Hain,
Sādhanā Dhan Sādhu Antarbhāv
Mein Āsanna Hain.

आपको करना है :

1. परमेष्ठी वंदना लयबद्ध सीखनी है।

You have to do :

Parmeshthi Vandanā to be learnt in tune.

❖❖

पाठ 2

संघ गीत

जय-जय धर्म-संघ अविचल हो।
संघ संघपति प्रेम अटल हो।।

1. हम सबका सौभाग्य खिला है,
प्रभु यह तेरापंथ मिला है।
एक सुगुरु के अनुशासन में,
एकाचार विचार विमल हो।।

2. दृढ़तर सुन्दर संघ-संगठन,
क्षीर-नीर-सा यह एकीपन।
है अक्षुण्ण संघ-मर्यादा,
विनय और वात्सल्य अचल हो।।

3. संघ-संपदा बढ़ती जाए,
प्रगति-शिखर पर चढ़ती जाए।
भैक्षव शासन नन्दन वन की,
सौरभ से सुरभित भूतल हो।।

4. 'तुलसी' जय हो सदा विजय हो,
संघ चतुष्टय बल अक्षय हो।
श्रद्धा-भक्ति बहे नस-नस में,
पग-पग पर प्रतिपल मंगल हो।।

आपको करना है :

संघ गीत लयबद्ध सीखना है।

SANGH GEET

Jaya-Jaya Dharm-Sangh Avichal Ho,
Sangh Sanghpati Prem Atal Ho.

1. Ham Sabkā Saubhāgya Khilā Hai,
Prabhu Yah Terāpanth Milā Hai.
Ek Suguru Ke Anushāsan Mein
Ekāchār Vichār Vimal Ho.

2. Dridhtar Sundar Sangh Sangathan
Kshir-Neer-Sa Yah Ekipan.
Hai Akshunna Sangh Maryādā
Vinaya Aur Vātsalya Achal Ho.

3. Sangh Sampadā Badhati Jaye,
Pragati-Shikhar Par Chadhati Jaye.
Bhaikshav Shāsan Nandan Van Ki,
Saurabh Se Surbhit Bhootal Ho.

4. 'Tulsi' Jay Ho Sadā Vijay Ho,
Sangh Chatushtaya Bal Akshaya Ho.
Shraddhā-Bhakti Bahe Nas-Nas Mein,
Pag-Pag Par Pratipal Mangal Ho.

You have to do :

Sangh Geet to be learnt in tune.

पाठ 3

पचीस बोल (1 से 8) — Pachees Bol (1-8)

पहला बोल : गति चार

1. नरक गति
2. तिर्यंच गति
3. मनुष्य गति
4. देव गति

Pahalā Bol : Gati Chār

1. Narak Gati
2. Tiryancha Gati
3. Manushya Gati
4. Dev Gati

दूसरा बोल : जाति पांच

1. एकेन्द्रिय
2. द्वीन्द्रिय
3. त्रीन्द्रिय
4. चतुरिन्द्रिय
5. पंचेन्द्रिय

Doosarā Bol : Jāti Pānch

1. Ekendriya
2. Dwiendriya
3. Triendriya
4. Chaturindriya
5. Panchendriya

तीसरा बोल : काय छह

1. पृथ्वीकाय
2. अप्काय
3. तेजस्काय
4. वायुकाय
5. वनस्पतिकाय
6. त्रसकाय

Teesrā Bol : Kāy Chah

1. Prithvikāy
2. Apkāy
3. Tejaskāy
4. Vayukāy
5. Vanaspatikāy
6. Traskāy

चौथा बोल : इन्द्रिय पांच

1. स्पर्शन इन्द्रिय
2. रसन इन्द्रिय
3. घ्राण इन्द्रिय
4. चक्षु इन्द्रिय
5. श्रोत्र इन्द्रिय

Chauthā Bol : Indriya Pānch

1. Sparshan Indriya
2. Rasan Indriya
3. Ghrāna Indriya
4. Chakshu Indriya
5. Shrotra Indriya

पांचवां बोल : पर्याप्ति छह

1. आहार-पर्याप्ति
2. शरीर-पर्याप्ति
3. इन्द्रिय-पर्याप्ति
4. श्वासोच्छ्वास-पर्याप्ति
5. भाषा-पर्याप्ति
6. मनःपर्याप्ति

Pānchwān Bol : Paryāpti Chah

1. Āhār Paryāpti
2. Shareer Paryāpti
3. Indriya Paryāpti
4. Swāsochhwas Paryāpti
5. Bhāshā Paryāpti
6. Manāh Paryāpti

छठा बोल : प्राण दस

1. श्रोत्रेन्द्रिय प्राण
2. चक्षुरिन्द्रिय प्राण
3. घ्राणेन्द्रिय प्राण
4. रसनेन्द्रिय प्राण

Chathā Bol : Prān Das

1. Shrotrendriya Prān
2. Chakshurindriya Prān
3. Ghrānendriya Prān
4. Rasanendriya Prān

❖❖

5. स्पर्शनेन्द्रिय प्राण
6. मनोबल
7. वचनबल
8. कायबल
9. श्वासोच्छ्वास प्राण
10. आयुष्य प्राण

5. Sparshanendriya Prān
6. Manobal
7. Vachanbal
8. Kāybal
9. Swasochhwas Prān
10. Ayushya Prān

सातवां बोल : शरीर पांच

1. औदारिक शरीर
2. वैक्रिय शरीर
3. आहारक शरीर
4. तैजस शरीर
5. कार्मण शरीर

Sātwān Bol : Shareer Pānch

1. Audārik Shareer
2. Vaikriya Shareer
3. Āhārak Shareer
4. Taijas Shareer
5. Kārman Shareer

आठवां बोल : योग पंद्रह

मनोयोग के चार भेद

1. सत्य मनोयोग
2. असत्य मनोयोग
3. मिश्र मनोयोग
4. व्यवहार मनोयोग

वचनयोग के चार भेद

5. सत्य वचनयोग
6. असत्य वचनयोग
7. मिश्र वचनयोग
8. व्यवहार वचनयोग

काययोग के सात भेद

9. औदारिक काययोग
10. औदारिक मिश्र काययोग
11. वैक्रिय काययोग
12. वैक्रिय मिश्र काययोग
13. आहारक काययोग
14. आहारक मिश्र काययोग
15. कार्मण काययोग

Āthwān Bol : Yog Pandrah

Manoyog Ke Chār Bhed

1. Satya Manoyog
2. Asatya Manoyog
3. Mishra Manoyog
4. Vyavahār Manoyog

Vachan Yog Ke Chār Bhed

5. Satya Vachanyog
6. Asatya Vachanyog
7. Mishra Vachanyog
8. Vyavahār Vachanyog

Kāy Yog Ke Sāt Bhed

9. Audārik Kāyyog
10. Audārik Mishra Kāyyog
11. Vaikriya Kāyyog
12. Vaikriya Mishra Kāyyog
13. Āhārak Kāyyog
14. Āhārak Mishra Kāyyog
15. Kārman Kāyyog

आपको करना है :

ये आठ बोल क्रमबद्ध रूप से सीखने हैं।

You have to do :

These eight bols to be learnt in order.

पाठ 4

संस्कार सप्तक — SANSKĀR SAPTAK

कितना जीवन कीमती, बड़े गर्व की बात।
तुलसी अब अंकन करें, जैसी निज औकात।।1।।

1. Kitnā Jeevan Keemti, Bade Garv kee Bāt,
Tulsi Ab Ankan Karen, Jaisi Nij Aukāt.

जानूं जीव अजीव मैं, पुण्य पाप की बात।
आश्रव संवर निर्जरा, बन्ध मोक्ष विख्यात।।2।।

2. Janun Jeev Ajeev Main, Punya Pāp Kee Bāt,
Āshrav Samvar Nirjarā, Bandh Moksha Vikhyat.

अस्तिकाय है पांच ही, जीवों की छह काय।
मैं जानूं निज नाम सम, तुलसी शान्त कषाय।।3।।

3. Astikāy Hain Pānch Hi, Jeevon kee Chhah Kāy,
Main Jānun Nij Nām Sam, Tulsi Shānt Kashāy.

तुलसी करनी जैसी भरनी, सुख-दुख स्वयं मिलेगा।
बोया बीज आकड़े का, फिर कैसे आम फलेगा।।4।।

4. Tulsi Karni Jaisi Bharni,
Sukh Dukh Swayam Milegā,
Boyā Beej Ākare Kā,
Phir Kaise Ām Phalegā.

दर्शन-ज्ञान-चरित्रमय, तीन रत्न अनमोल।
इष्टदेव-गुरु-धर्ममय, तुलसी तत्व अतोल।।5।।

5. Darshan Jnan Charitramay,
Teen Ratna Anmol,
Ishtadev-Guru-Dharmamay,
Tulsi Tatwa Atol.

आर्य भिक्षु का मैं चेला हूँ, तेरापंथी जैन हूँ।
महाश्रमण हैं सद्गुरु मेरे, मैं पहले गुड मैन हूँ।।6।।

6. Ārya Bhikshu Kā Main Chelā Hoon
Terāpanthi Jain Hoon,
Mahāshraman Hain Sadguru Mere,
Main Pahale Good Man Hoon.

महाश्रमणी हैं साध्वी प्रमुखा, श्री भैक्षव शासन सुखकार।
वंदनीय सब साधु-साध्वियां, विनय भाव से उठ सवार।।7।।

7. Mahāshramani Hain Sadhwi Pramukhā,
Shri Bhaikshav Shāsan Sukhkār,
Vandniya Sab Sadhu Sadhwiyān,
Vinay Bhav Se Uth Sawār.

आपको करना है :

1. आपको ये पद्य क्रमबद्ध सीखने हैं।

You have to do :

1. These verses to be memorised in order.

पाठ 5

महावीर अष्टकम् (आचार्य महाप्रज्ञ)	MAHĀVIR ASHTAKAM (Āchārya Mahāpragya)

1. अनेकान्तः कान्तः सकलसरितां संगम इव,
प्रवादे स्याद्वादः सकलवचसामुद्गम इव।
न सत्यं सत्यांशैर्वियुतमिह दृष्टं बुधजनैः,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

1. Anekāntah Kāntah
Sakalasaritām Sangam Iva,
Pravāde Syadvādah
Sakalavacha sāmudgama Iva.
Na Satyam Satyānsnhair
Viyutamih Drishtam Budhajanaih,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

2. न रागो नो द्वेषः प्रशम रसपीयूष ललितं,
शरीरं संवृत्तं गरलममृतं विस्मय कथा।
न दृष्टिर्नो दंशः प्रखर फणिनश्चाऽपि सफलः,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

2. Na Rago No Dweshah
Prasham Rasapiyush Lalitam,
Shariram Samvrittam
GaralamamritamVismaya Kathā.
Na Drishtirno Danshah
Prakhara Faninashchāpi Safalah,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

3. इदं शस्त्रं भीतिं जनयति जनानामधिमनः,
इदं सैन्यं दैन्यं जनयति समाजे प्रतिपदम्।
विदेहे देहस्य स्थितिरभयमाप्नोति सहजं,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

3. Idam Shastram Bheetim
Janayati Janānāmadhimanah,
Idam Sainyam Dainyam
Janayati Samāje Pratipadam.
Videhe Dehasya
Sthitirbhayamāpnoti Sahajam,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

4. सुरक्षां नो नीता किमु तृणकुटीं भो मुनिवर!
निजं नीडं पक्षी तनुतनुरहो रक्षतितमाम्।
तदा ध्यातं स्वात्मा प्रभवति कुटीरं न च परं
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

4. Surakshām No Neeta
Kimu Trinakutim Bho Munivara!
Nijam Needam Pakshi
Tanutanuraho Rakshatitamām.
Tada Dhyatam Swatma Prabhavati
Kutiram Na Cha Param,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

5. निमेषार्द्धो नूनं ज्ञपयति न चात्मा बहिरिह,
तथैवार्द्धोन्मेषो ज्ञपयति च तत्त्वं बहिरपि।
विचित्रा मुद्रेयं वरनयनयोर्ध्यान निरता,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

5. Nimeshardho Noonam Gyapayati
Na Chātmā Bahiriha,
Tathaivārdhonmesho
Gyapayati Cha Tattwam Bahirapi.
Vichitrā Mudreyam
Varanayanayordhyān Niratā,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

6. अगम्यः स श्वासः परिमलमुपेतोब्ज सुलभं,
अगम्या सा वाणी प्रसरति सुदूरं सहजतः।
अगम्यो गम्यस्त्वं कथमिति न जाने यतिपते!
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

6. Agamyah Sa Shwāsah
Parimalamupetobja Sulabham,
Agamyā Sā Vāni Prasarati
Sudooram Sahajatah.
Agamyo Gamyastwam
Kathamiti Na Jāne Yatipate,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

7. न कालस्यैकान्तो न खलु नियतेर्मुख्य पदवी,
स्वकीयं कर्तृत्वं प्रबल पुरुषार्थेन फलितं।
व्रतानां संदेशः श्रुतिमधिगतो मंत्रमभवत्,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

7. Na Kālasyaikanto Na Khalu
Niyatermukhya Padavi,
Swakeeyam Kartritwam Prabala
Purushārthen Phalitam.
Vratānām Sandeshah
Shrutimadhigato Mantramabhavat,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

8. अनन्तानन्देन क्वचिदपि न कष्टानुभवनं,
अनन्तं तज्ज्ञानं विदितमभितो विश्वमखिलम्।
अनन्ता सा शक्तिः क्वचिदपि न किंचित् प्रतिहता,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

8. Anantānanden Kwachidapi
Na Kashtānubhavanam,
Anantam Tajjnānam
Viditamabhito Vishwamakhilam.
Anantā Sā Shaktih Kwachidapi
Na Kinchit Pratihatā,
Mahāviro Dhirah Sfuratu
Mam Chitte Pratipalam.

आपको करना है :

1. आपको ये श्लोक क्रमबद्ध सीखने हैं।
2. ये श्लोक शुद्ध उच्चारण के साथ सीखने हैं।

You have to do :

1. These verses to be learnt in order.
2. These verses should be learnt with right pronounciation.

पाठ 6

भगवान् महावीर — BHAGAWĀN MAHĀVIR

प्रश्न 1. भगवान् महावीर का जन्म कब हुआ?

उत्तर : ईसा पूर्व 599 वर्ष, चैत्र शुक्ला 13 को हुआ।

प्रश्न 2. भगवान् महावीर का जन्म कहां हुआ?

उत्तर : वैशाली जनपद के क्षत्रिय कुंडनगर में हुआ।

प्रश्न 3. भगवान् महावीर के माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर : उनकी माता का नाम महारानी त्रिशला तथा पिता का नाम राजा सिद्धार्थ था।

प्रश्न 4. उनके कितने भाई व बहन थे?

उत्तर : उनके बड़े भाई नंदीवर्धन व बड़ी बहन सुदर्शना थी।

प्रश्न 5. महावीर की पत्नी व संतान का क्या नाम था?

उत्तर : पत्नी यशोदा एवं संतान में एक पुत्री प्रियदर्शना थी।

प्रश्न 6. महावीर गृहवास में कितने वर्ष रहे?

उत्तर : तीस वर्ष।

प्रश्न 7. भगवान् महावीर ने कितने वर्ष विशेष साधना की?

उत्तर : बारह वर्ष छह माह पन्द्रह दिन।

प्रश्न 8. वे केवलज्ञानी कितने वर्ष रहे?

उत्तर : तीस वर्ष।

Q 1. When was Bhagawān Mahāvir Born?

Ans. On Chaitra Sukla 13 in the year 599 B.C.

Q 2. Where was Bhagawān Mahāvir born?

Ans. In a place called Kshatriya Kundnagar of the Vaishāli Janpad (Country).

Q 3. What was the name of Bhagawān Mahāvir's parents?

Ans. His mother's name was Queen Trishalā and his father's name was king Siddhārth.

Q 4. How many brothers and sisters did he have?

Ans. His elder brother was Nandivardhan and an elder sister was Sudarshanā.

Q 5. What was Mahāvir's wife's and child's name?

Ans. Wife was Yashoda and child was a daughter named Priyadarshanā.

Q 6. How many years did Mahāvir spend with family?

Ans. Thirty years.

Q 7. For how many years did Bhagawān Mahāvir do special Sādhanā?

Ans. For twelve years six months and fifteen days.

Q 8. For how many years did he live as a Kevaljnāni?

Ans. Thirty years.

❖❖❖

प्रश्न 9. गणधर कितने थे?

उत्तर : ग्यारह।

प्रश्न 10. साधु कितने साध्वी कितनी?

उत्तर : साधु चौदह हजार व साध्वियां छत्तीस हजार।

प्रश्न 11. भगवान् महावीर का निर्वाण कब व कहां हुआ?

उत्तर : ईसा पूर्व 527 वर्ष, कार्तिक अमावस्या, पावापुरी (बिहार) में।

प्रश्न 12. महावीर के कौन-कौन से नाम थे?

उत्तर : वर्धमान, सन्मति, ज्ञातपुत्र एवं महावीर।

प्रश्न 13. उनके प्रथम शिष्य कौन थे?

उत्तर : गौतम स्वामी।

प्रश्न 14. उनकी प्रथम शिष्या कौन थी?

उत्तर : चंदनबाला।

प्रश्न 15. उनके संघ का भार किसने संभाला?

उत्तर : संघ का भार गणधर सुधर्मा स्वामी ने संभाला।

Q 9. How many Ganadhars were there?

Ans. Eleven.

Q 10. How many monks and nuns?

Ans. Fourteen thousand monks and thirty six thousand nuns.

Q 11. Where and when did Bhagawān Mahāvir attain salvation?

Ans. On Kārtik Amāvasyā in the year 527 B.C. at Pawapuri in Bihar.

Q 12. What were Mahāvir's names?

Ans. Vardhaman, Sanmati, Jnatputra and Mahāvir.

Q 13. Who was his first disciple?

Ans. Gautam Swāmi.

Q 14. Who was his first female disciple?

Ans. Chandanbālā.

Q 15. Who looked after his sangh?

Ans. Ganadhar Sudharmā Swāmi looked after his sangh.

❖❖❖

पाठ 7

सामान्य ज्ञान — GENERAL KNOWLEDGE

प्रश्न 1. जैन धर्म में सबसे बड़ा महामंत्र कौन सा है?

उत्तर : जैन धर्म का सबसे बड़ा महामंत्र नमस्कार महामंत्र (नवकार) है।

प्रश्न 2. सामायिक कितने मिनट की होती है?

उत्तर : सामायिक 48 मिनट की होती है।

प्रश्न 3. सामायिक में क्या किया जाता है?

उत्तर : सामायिक में सावद्य योग का त्याग किया जाता है।

प्रश्न 4. जैन धर्म के प्रमुख संप्रदाय कितने एवं कौन-कौन से हैं?

उत्तर : जैन धर्म के प्रमुख संप्रदाय दो हैं –
1. श्वेतांबर
2. दिगंबर

प्रश्न 5. श्वेतांबर परंपरा की कितनी व कौन सी शाखाएं हैं?

उत्तर : श्वेतांबर परंपरा में मुख्य तीन शाखाएं हैं –
1. मूर्तिपूजक
2. स्थानकवासी
3. तेरापंथ

प्रश्न 6. हम किस परंपरा में आते हैं? उसकी स्थापना कब व कहां हुई?

उत्तर : हम तेरापंथ परंपरा में आते हैं। तेरापंथ की स्थापना आषाढ़ी पूर्णिमा, संवत 1817 को राजस्थान के राजसमंद जिले के केलवा नामक स्थान में हुई।

Q 1. Which is the most important Mahāmantra of Jain religion?

Ans. The most important Mahāmantra of Jain religion is Namaskār Mahāmantra.

Q 2. For how many minutes is a ‘Sāmāyik’?

Ans. One Sāmāyik is for 48 minutes.

Q 3. What does one do in a Sāmāyik?

Ans. All the sinful activities are abstained in a Sāmāyik.

Q 4. How many sects are there in Jainism? Name them.

Ans. There are two main sects :
1. Swetāmbar
2. Digambar

Q 5. Name the branches of Swetāmbar sect.

Ans. There are three main branches of Swetāmbar sect --
1. Murti Poojak (Idol Worshipor)
2. Sthānakwāsi
3. Terāpanth

Q 6. Which branch do we belong to? When and where was ‘Terāpanth’ formed?

Ans. We belong to Terāpanth. Terāpanth was formed on Āshādhee Poornimā in the year V. S. 1817 in a place called Kelwā in the district Rajasamand of Rajasthan.

❖❖❖

प्रश्न 7. तेरापंथ की स्थापना क्यों हुई?

उत्तर : धर्म में फैले शिथिलाचार के विरुद्ध तेरापंथ की स्थापना हुई।

Q 7. Why was Terāpanth formed?

Ans. Terāpanth was formed as a part of revolution against the declining code of conduct in the religion.

प्रश्न 8. तेरापंथ नामकरण कहां हुआ?

उत्तर : तेरापंथ नामकरण जोधपुर में हुआ।

Q 8. Where was 'Terāpanth' named?

Ans. Terāpanth was named at Jodhpur.

प्रश्न 9. तेरापंथ का क्या अर्थ है?

उत्तर : हे प्रभो! यह तेरा-पंथ है। अर्थात् हे प्रभो! यह तेरा (तुम्हारा) पंथ है।

Q 9. What is the meaning of Terāpanth?

Ans. It means O Lord! It is your path.

प्रश्न 10. धर्म त्याग में है या भोग में?

उत्तर : धर्म त्याग में है।

Q 10. Religion is in penance or materialism?

Ans. Religion is in penance.

प्रश्न 11. क्या धर्म भगवान की आज्ञा में है?

उत्तर : हाँ, धर्म भगवान की आज्ञा में है।

Q 11. Is religion as per the order of God or no?

Ans. Yes, it is as per the order of God.

प्रश्न 12. धर्म दया में है या हिंसा में?

उत्तर : धर्म दया में है, हिंसा में नहीं।

Q 12. Is religion in mercy or violence?

Ans. Religion is in mercy, not in violence.

प्रश्न 13. धर्म उपदेश में है या बल प्रयोग में?

उत्तर : धर्म उपदेश में है।

Q 13. Is religion in discources or force?

Ans. Religion is in discources.

प्रश्न 14. धर्म मूल्य से मिलता है या अनमोल है?

उत्तर : धर्म अनमोल है।

Q 14. Religion have monetary value or is it priceless?

Ans. Religion is priceless.

प्रश्न 15. क्या धर्म व अधर्म में मिश्रण हो सकता है?

उत्तर : नहीं, धर्म व अधर्म में मिश्रण नहीं हो सकता।

Q 15. Can there be a mixture of religion and non religion?

Ans. No, religion and non-religion cannot be mixed.

पाठ 8

प्रेक्षाध्यान : मंगल-भावना	PREKSHĀ DHYĀN : MANGAL BHĀVNĀ

श्री संपन्नोऽहं स्याम् मैं आभा और संपदा से संपन्न बनूं।	**SHRI SAMPANNOHAM SYĀM** Main Ābhā Aur Sampadā Se Sampanna Banoõ.
ह्री संपन्नोऽहं स्याम् मैं लज्जा-आत्मानुशासन से संपन्न बनूं।	**HRI SAMPANNOHAM SYĀM** Main Lajja-Ātmānushāsan Se Sampanna Banoõ.
धी संपन्नोऽहं स्याम् मैं बुद्धि-संपन्न बनूं।	**DHI SAMPANNOHAM SYĀM** Main Buddhi-Sampanna Banoõ.
धृति संपन्नोऽहं स्याम् मैं धैर्य-संपन्न बनूं।	**DHRITI SAMPANNOHAM SYĀM** Main Dhairya-Sampanna Banoõ.
शक्ति संपन्नोऽहं स्याम् मैं शक्ति-संपन्न बनूं।	**SHAKTI SAMPANNOHAM SYĀM** Main Shakti-Sampanna Banoõ.
शांति संपन्नोऽहं स्याम् मैं शांति-संपन्न बनूं।	**SHANTI SAMPANNOHAM SYĀM** Main Shanti-Sampanna Banoõ.
नन्दि संपन्नोऽहं स्याम् मैं आनन्द-संपन्न बनूं।	**NANDI SAMPANNOHAM SYĀM** Main Anand-Sampanna Banoõ.
तेजः संपन्नोऽहं स्याम् मैं तेज-संपन्न बनूं।	**TEJAH SAMPANNOHAM SYĀM** Main Tej-Sampanna Banoõ.
शुक्ल संपन्नोऽहं स्याम् मैं शुक्ल-संपन्न बनूं।	**SHUKLA SAMPANNOHAM SYĀM** Main Shukla-Sampanna Banoõ.

❖❖❖

ध्येय सूत्र

संपिक्खए अप्पगमप्पएणं
आत्मा के द्वारा आत्मा को देखें।

विवेक सूत्र

1. **अप्पणा सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए**
   स्वयं सत्य खोजें, सबके साथ मैत्री करें।

2. **आहंसु विज्जा चरणं पमोक्खं**
   दुःख-मुक्ति के लिए विद्या और आचार का अनुशीलन करें।

Dhyey Sootra

Sampikkhaye Appagamappaenam.
Ātma Ke Dwārā Ātmā Ko Dekhen.

Vivek Sutra

1. **Appana Sachchamesejja Mettim Bhuesu Kappae**
   Swayam Satya Khojen, Sabke Sāth Maitri Karen.

2. **Āhamsu Vijja Charanam Pamokham**
   Dukh-Mukti Ke liye Vidya aur Āchar Ka Anushilan Karen.

आपको करना है :

1. मंगल भावना, ध्येय सूत्र व विवेक सूत्र सीखना है।

2. इन सबका लय के साथ उच्चारण करना है।

You have to do :

1. Mangal Bhāvnā, Dhyey Sutra and Vivek Sutra to be learnt.
2. All have to be sung in tune with proper pronounciation.

शिक्षा के दो रूप हैं - ग्रहण शिक्षा, आसेवन शिक्षा। सूत्र-पाठ का शुद्ध उच्चारण व उसका अर्थबोध ग्रहण शिक्षा है। जो कुछ सुना, समझा व याद किया, उसे जीवन में उतारना आसेवन शिक्षा है।

वृक्ष की जड़ सूख जाने पर शाखा-प्रशाखा सब कुछ सूख जाती है। व्यक्ति के भीतर से विनय का गुण निकल जाने पर सब गुण समाप्त हो जाते हैं।

विद्यार्थी जीवन ही, सारे जीवन की नींव।
दिखलाना है तुम्हें देश को, जो आदर्श सजीव।।
विद्या और विनय का संयोग सोने में सुगंध है।

चारों ओर विकृति के संस्कार हावी हैं। नैतिक मूल्यों को झकझोरने वाले साधन भी प्रचुर मात्रा में हैं। लौकिक विद्या के साथ भोगवाद का क्रम भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। ऐसे में ज्ञानशाला एक शक्तिशाली उपक्रम है।

- ज्ञानशाला को आधुनिक एवं वैज्ञानिक रूप दिया जाए।
- आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि का विकास हो।
- उसमें तत्त्व व दर्शन के साथ आचार संहिता भी जोड़ी जाए।
- ज्ञानशाला मात्र शिक्षण का उपक्रम ही नहीं जीवन विज्ञान है।

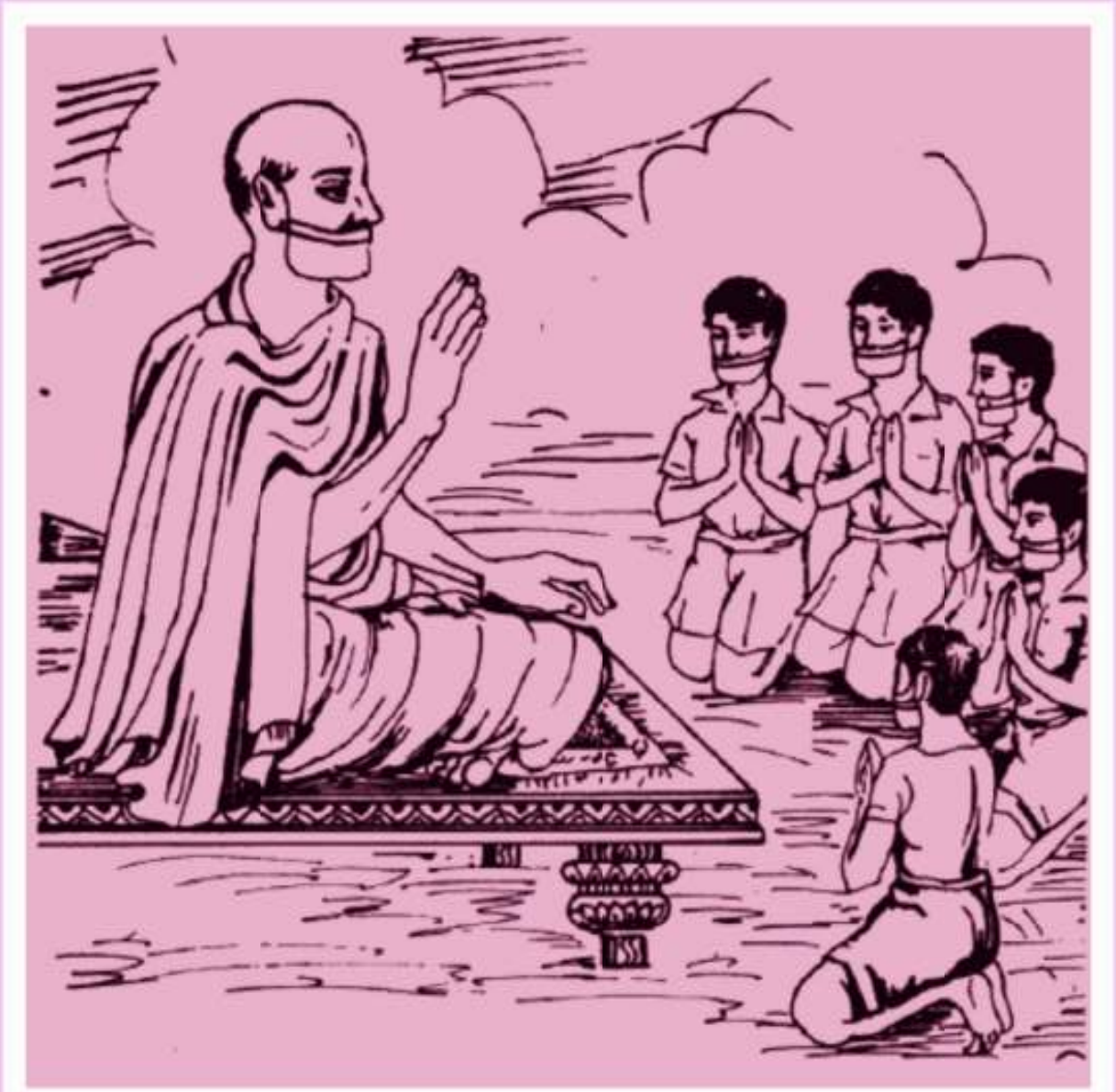

युग पुरुष के अमृत बिन्दु

शिक्षा की दुर्गति या असद्गति देख मेरे मन में बच्चों को संस्कारी बनाने की बार-बार आ रही है। संस्कारों के बिना शिक्षा केवल भार बन जाएगी। गधे पर चंदन का भार डाल दिया जाए तो वह भार का ही अनुभव करेगा सुगन्ध का नहीं।

प्रत्येक अभिभावक को अपने बालकों को लौकिक शिक्षा के साथ-साथ संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला एवं आध्यात्मिक शिविरों में अवश्य भेजना चाहिए।

- आचार्य तुलसी